भर्तृहरि के मत में धन एवं विद्या की महत्ता

डॉ० रंजीत कुमार *

भर्तृहरि शतकत्रय के प्रणेता माने जाते हैं इन्होंने श्रृंगारशतक, नीतिशतक एवं वैराग्यशतक की रचना की। भर्तृहरि के शतकों को सामान्य जन से लेकर विद्वान तथा साहित्य शास्त्र के मर्मज्ञ तक पढ़ते रहे हैं। इन शतको में नीतिशतक को बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। क्योंकि इसमें लोक–जीवन के व्यवहार की अनेक सूक्तियाँ है तथा उसके मुक्तकों में जिस विषय–वस्तु का वर्णन है, उससे सार्वकालिक अनुभवों के अनेक सिद्धान्त प्रत्यक्ष होते हैं जो आज भी जीवन और लोक के लिए संजीवनीभूत हैं।

धन की महत्ता –

भर्तृहरि अपने नीतिशतक में धन के महत्त्व को अत्यन्त विस्तार से बताया है। उनका मानना था कि जिसके पास धन है वह ही मनुष्य उच्चकुल का है वही विद्वान है, वह ही सम्पूर्ण शास्त्रों को जानने वाला है सभी गुण उसी के पास विद्यमान है वही अच्छा वक्ता माना जाता है सुन्दर कहा जाता है सम्पूर्ण गुण सोने में समाहित है–

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान्गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः कान्चनमाश्रयन्ते।।

भर्तृहरि धन की तीन गतियां बताई है– दान, भोग और नाश। उनका मानना था कि जिसके पास धन है या तो वह उसे दान करे या उसका उपभोग करे यदि वह न दान करता है और न उसका उपभोग करता है तो उसका धन तीसरी गति अर्थात् नष्टता को प्राप्त हो जाता है–

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

योगी भर्तृहरि के मत में दरिद्रता की हालत में मनुष्य एक मुट्ठी जौ के लिए भी तरसता रहता है फिर वही आदमी जब धन–धान्य से परिपूर्ण हो जाता है तो सारी पृथ्वी को वह तिनके के समान समझने लगता है उनका कहना है कि धनवानों की अवस्था ही पदार्थों को छोटा अथवा बड़ा बनाता है–

परिक्षीणः कश्चित्स्पृहयति यवानां प्रसृतये
स पश्चात्सम्पूर्णः कलयति धरित्रीं तृणसमाम्।
अतश्चानेकान्ता गुरुलघुतयार्थेषु धनिना–
मवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च।।

भर्तृहरि के मत में विधाता के अनुसार ही धन मिलता है विधाता ने ललाट में जो थोड़ा या बहुत धन लिख दिया है, वह सम्पूर्ण धन मरुस्थल या मेरु पर्वत पर मिल ही जायेगा। इसलिए हे मनुष्य धैर्य धारण करो, धनवानों के सामने अपनी दीन–हीन भावना मत प्रकट करो। क्योंकि देखो, घड़ा कूप में भरो या समुद्र में भरो, उतना ही जल ग्रहण करता है जितना उसमें आता है।

विद्या की महत्ता–

विद्या की महत्ता को बताते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि विद्याा ही मनुष्य की सबसे बड़ी सुन्दरता है यही उसका छिपा या सुरक्षित धन है, विद्याा ही भोग–विलास दिलाती है उसे उसी से यश तथा सुःख की प्राप्ति होती है अतः विद्या गुरुओं का भी गुरु है विदेश में यही विद्याा ही मित्र बनती है, विद्या ही सबसे बड़ी देवता है विद्या ही राजाओं के बीच में पूजी जाती है, धन नहीं पूजा जाता। इसलिए भर्तृहरि ने कहा है कि विद्या से रहित मनुष्य पशु के तुल्य है।

विद्या नाम नरस्य रुपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशःसुखकारी विद्या गुरुणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगगने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः।।

भर्तृहरि वाणी को मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण बताया है उनका मानना था कि बाँह पर

* स०अ०, श्री राम बल्लभ भगवन्ता, विद्यापीठ इण्टर कॉलेज, ड्योढ़ी फैजाबाद।

बाजूबंद पहनने से मनुष्य की शोभा नहीं होती है और न ही चन्द्रमा के समान धवल मुक्ताहार धारण करने से उसकी शोभा बढ़ती हैं न ही स्नान करने से, न चन्दन आदि का लेप लगाने से, न पुष्पों की माला धारण कहने से और न ही केशपाशों को सजाने ही से उसकी शोभा होती है। बल्कि सुसंस्कृत वाणी ही एक ऐसी वस्तु है जो मनुष्य को सुशोभित करती है। मनुष्य के सभी आभूषणों के नष्ट हो जाने पर भी वाणी रुपी आभूषण हमेशा बना रहता है यह कभी नष्ट नहीं होता है–

केयूराणि न भूश्यन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्तेऽखिलभूषणनि सततं वाम्भूषणं भूषणम्।।

विद्वान पुरुषों के गुणों की महत्ता को बताते हुए योगीराज भर्तृहरि ने कहा है कि विधाता क्रोधित होकर हंसों के कमल–वन में विचरण करने के सुख को पूर्णरुप से नष्ट कर सकता है परन्तु उसके अन्दर जो पानी और दूध को अलग करने का गुण है उसे वह कभी भी छीन नहीं सकता है–

अम्भोजिनीवनविहारविलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्त्तिमपहर्तुमसौ समर्थः।।

भर्तृहरि ने विद्वान पुरुषों के समक्ष लक्ष्मी को भी कम महत्त्व दिया है उनका मानना था कि तत्वज्ञान प्राप्त किए हुए विद्वान पुरुषों का अनादर कभी नहीं करना चाहिए तिनके के समान तुच्छ लक्ष्मी ऐसे विद्वानों को बाँध नहीं सकती है। उन्होंने कहा है कि नवीन मदरेखा से जिन मातङ्गों के गण्डस्थल काले हो गये हैं उन मातंगों को बाँधने के लिए कमल के डंठल का सूत जंजीर नहीं हो सकता है–

अधिगतपरमार्थान्पण्डितान्मावमंस्था–
स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि।
अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानां
न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम्।।

इस प्रकार भर्तृहरि ने धन एवं विद्या की महत्ता से सम्बन्धित श्लोकों के माध्यम से समाज को एक नयी दिशा देने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. नीतिशतकम् : श्री तारिणीश झा
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास : डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास : डॉ० बलदेव उपाध्याय